I Semester BCA/B.Voc (IT) Examination March/April 2021-22

Language – HINDI under AECC

Nibandh Prabha , Karyalayi Hindi & Sankshepan

Time : 2hrs Max marks : 60

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए 10x1= 10

1. कौन सी भाषा पौढ़ मानी जाती है?

2. हमारी सभ्यता का क्या है?

3. बड़ी चीज बड़े संकटों में क्या पाती है?

4. 'हिम्मत और ज़िंदगी' के लेखक कौन हैं?

5. प्रजा किसे बड़ा मानती है?

6. मनुष्य का प्रकाश क्या है।

7. सबसे बड़ा दान क्या होता है?

8. फुटकर जलापनो से क्या पता चलता है?

9. 300 इंच वर्षा कहाँ होती है?

10. किसका मन महीनों से बेहद उदास है?

II. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्ही दो का संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 2x7=14

1. हमने अपने अस्तित्व को खो दिया, अपने धर्म की सत्ता खो दी,अपनी संस्कृति को खो बैठे,तो हमारा अंत हो जाएगा।

2. अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पांव बढ़ाते जाने में ही है।

3. किसी समाज का पता उसके धनाढ्य व्यापारियों, सरकारी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को देखकर उतना नही चलता, जितना उनके बेकार आदमियों को देखकर।

III. किसी एक निबंध का सारांश उसकी विशेषताओं के साथ लिखिए। 1x16=16

1. बुद्धदेव

2. मित्रता

IV. कार्यालयी हिन्दी (किसी एक का उत्तर लिखिए । 1x10=10

1. टिप्पण की परिभाषा विशेषताओं सहित लिखिए।

2. कॉलेज के वार्षिक उत्सव पर एक प्रतिवेदन लिखे।

3. आलेखन किसे कहते हैं ,स्पष्ट करें।

V.निम्नलिखित अनुच्छेद का संक्षिप्तीकरण कीजिए और एक उचित शीर्षक दीजिए। 1x10=10

ऋतुराज वसन्त के आगमन से ही शीत का भयंकर प्रकोप भाग गया। पतझड़ में पश्चिम-पवन ने जीर्ण-शीर्ण पत्रों को गिराकर लताकुंजों, पेड़-पौधों को स्वच्छ और निर्मल बना दिया। वृक्षों और लताओं के अंग में नूतन पत्तियों के प्रस्फुटन से यौवन की मादकता छा गयी। कनेर, करवीर, मदार, पाटल इत्यादि पुष्पों की सुगन्धि दिग्दिगन्त में अपनी मादकता का संचार करने लगी। न शीत की कठोरता, न ग्रीष्म का ताप। समशीतोष्ण वातावरण में प्रत्येक प्राणी की नस-नस में उत्फुल्लता और उमंग की लहरें उठ रही है। गेहूँ के सुनहले बालों से पवनस्पर्श के कारण रुनझुन का संगीत फूट रहा है। पतों के अधरों पर सोया हुआ संगीत मुखर हो गया है। पलाश-वन अपनी अरुणिमा में फूला नहीं समाता है। ऋतुराज वसन्त के सुशासन और सुव्यवस्था की छटा हर ओर दिखायी पड़ती हैं। कलियों के यौवन की अँगड़ाई भ्रमरों को आमन्त्रण दे रही है। अशोक के अग्निवर्ण कोमल एवं नवीन पत्ते वायु के स्पर्श से तरंगित हो रहे हैं। शीतकाल के ठिठुरे अंगों में नयी स्फूर्ति उमड़ रही है। वसन्त के आगमन के साथ ही जैसे जीर्णता और पुरातन का प्रभाव तिरोहित हो गया है। प्रकृति के कण-कण में नये जीवन का संचार हो गया है। आम्रमंजरियों की भीनी गन्ध और कोयल का पंचम आलाप, भ्रमरों का गुंजन और कलियों की चटक, वनों और उद्यानों के अंगों में शोभा का संचार- सब ऐसा लगता है जैसे जीवन में सुख ही सत्य है, आनन्द के एक क्षण का मूल्य पूरे जीवन को अर्पित करके भी नहीं चुकाया जा सकता है। प्रकृति ने वसन्त के आगमन पर अपने रूप को इतना सँवारा है, अंग-अंग को सजाया और रचा है कि उसकी शोभा का वर्णन असम्भव है, उसकी उपमा नहीं दी जा सकती।